

Εξήγηση Δοξολογίας Δημητρίου Λώτου του Χίου σε ήχο πλ. δ'.

Στο παρόν άρθρο δημοσιεύεται για πρώτη φορά εξήγηση της αργής δοξολογίας του Δημητρίου Λώτου του Χίου σε ήχο πλ. δ', η οποία περιέχεται στα ff186v-189r αυτογράφου κώδικα του Λώτου που βρίσκεται στην Εθνική Βιβλιοθήκη της Ελλάδος και με αρ. ΕΒΕ 3469.

Ο Δημήτριος Λώτος υπήρξε γνωστός κωδικογράφος και διετέλεσε "*Πρωτοψάλτης της των Σμυρναίων Εκκλησίας*" (ΕΒΕ 3469, f411r) κατά τα τέλη 18ου-αρχές 19ου αι. Τα γραψίματά του, με χρήση της γραφής του Πέτρου Λαμπαδαρίου, υπήρξαν λίαν επιμελημένα και αναλυτικά. Οι κώδικές του περιέχουν κλασσικά μαθήματα σε δύο, σπανίως και τρεις εκδοχές διαδοχικών εξηγήσεων, με πορεία από την μέση πλήρη γραφή μέχρι την αναλυτική γραφή του Πέτρου και με ενδιάμεσες στάσεις σε μεταβατικές γραφές όπως αυτή του Μπαλασίου Ιερέως, Δανιήλ Πρωτοψάλτου κ.ά.

Ως προς το μέλος της δοξολογίας, πρέπει κατ' αρχήν να πούμε πως ακολουθεί κλασσική διάρθρωση μέλους της νέας Παπαδικής και παρουσιάζει μεγάλη ομοιότητα στην δομή της με την δοξολογία του Ιωάννου Πρωτοψάλτου Τραπεζουντίου σε πλ. δ', εξήγηση της οποίας μπορεί κανείς να βρεί στην Πανδέκτη, τομ. Β', εκδ. 1851 (επανέκδ. "Τέρτιος") και στις σελ. 701 και εφ' εξής. Θα τολμούσαμε να πούμε πως ο Λώτος εμπνεύστηκε την δομή της δοξολογίας του από αυτήν του Ιωάννου, δίνοντας ίσως μιά άλλη άποψη για το τί είναι "κλασσικό" σε ένα μέλος πλ. δ' της νέας Παπαδικής χωρίς μελοποιητικές ιδιαιτερότητες και λογικές μακάμ (π.χ. επτάφωνος πλ. δ' κ.λπ.), αλλά οπωσδήποτε με "επίσημον" στο μέλος του (κατά Χρύσανθο) και γνωριστικές χαρακτηριστικές θέσεις με την υπογραφή του Λώτου.

Και ιδού το μέλος:

Erzählen Sie für jeden Tag persönlich geschärfte und Nassladen Tagung.

Figure 1

1. $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

[illegible]

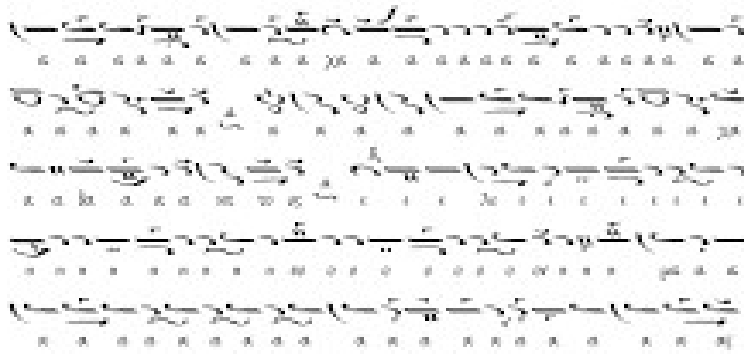
V u gwa ge re ri i e e re ha yoo pa e re re ryo owo wo no pe re
re i ha e ho e ha yoo oo no pa e i re re A ee yoo p
owo oo no pa e i re re A he a nno pe e yoo a a ha owo re re
he e e e ha A

K

Handwritten musical notation on a five-line staff.

[illegible]

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817.



Τόμος καὶ τὸ θεοῦ ἔλεος.

Τμήμα ἐκ Μάνης, ἐκ τοῦ Διαβόλου, 187.

Κλείνω αυτό το άρθρο χρησιμοποιώντας λόγια που ο Λώτος απευθύνει προς τους αναγνώστες του εν λόγω κώδικα στο f411v: "εύχεσθε αντιβολώ υμάς προς αυτόν τον πανοικτεῖρμονα Κύριον (οσάκις αυτήν -την εξήγησιν- εντυχάνητε) και υπέρ εμού, Νικολάου Ιερέως, του πολλά κοπιάσαντος, όπως ἔξομεν ἅμα παρ' αυτού τον μισθόν διά της υπέρ αλλήλων προς Αυτόν εντεύξεως, και αξιώσοι ἅπαντας ημάς της ουρανίου Αυτοῦ Βασιλείας, εν Χριστῷ Ἰησοῦ τῷ Κυρίῳ ημῶν."